समाज और राष्ट्र के लिए खतरनाक साबित होती रेव पार्टियां

राजधानी दिल्ली की बस्तियो में नजर डालें तो आपको पार्कों में, सड़कों के किनारे नशा करते लोग दिखाई दे जायेंगे। पुनर्वास कालोनियो में तो ८० फीसदी बच्चे ड्रग्स के आदी हो चुके है। कबाड़ बीन कर रोजाना तीन सौ रुपये कमाने वाले लोग अपना पैसा ड्रग्स पर खर्च कर रहे हैं। नशा और नशे का कारोबार अपनी सीमायें पार कर रहा है।

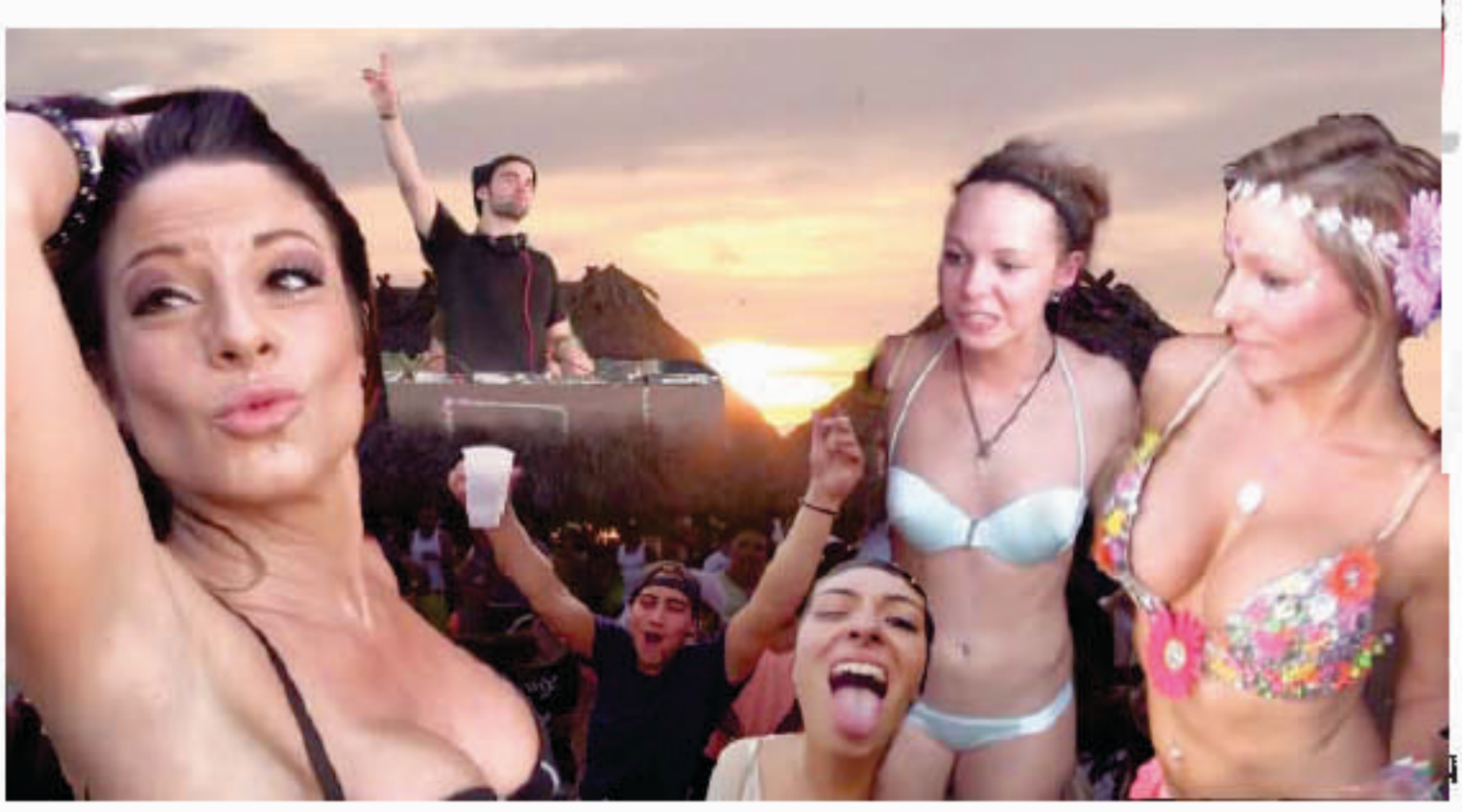

दिल्ली के युवा वर्ग में रेव पार्टियों का बढ़ता प्रचलन गंभीर चिन्ता का विषय है, एक त्रासदी है, विडम्बना है। ऐसे बहुत से गिरोह सक्रिय हैं जो दिल्ली के युवावर्ग को नशे की दलदल में ढकेल रहे हैं। दिल्ली और एनसीआर में एक के बाद एक पकड़ी जा रही रेव पार्टियों से स्पष्ट है कि दिल्ली का युवा वर्ग नशे की चपेट में आ चुका है। पहले उत्तर प्रदेश के नोएडा में एक फार्म हाउस में चल रही रेव पार्टी पर छापा मारा गया था, तब 192 लोगों को गिरफ्तार किया गया था जिनमें 31 युवतियां भी शामिल थीं। अब दिल्ली के छतरपुर में एक कम्पाउंड में रेव पार्टी पर छापेमारी की गई। दिल्ली पुलिस और एक्साइज डिपार्टमेंट की कार्रवाई में नाबालिग लड़कों और लड़कियों समेत एक हजार लोगों को पकड़ा गया। भारी मात्रा में शराब और नशीले पदार्थ पकड़े गये हैं। पंजाब की तर्ज पर दिल्ली एवं एनसीआर में बढ़ती रेव पार्टियां उन्मुक्त होने एवं नशे की अंधी सुरंगों में उतरने का एक माध्यम है, जो समाज एवं राष्ट्र के लिये खतरनाक साबित होती जा रही हैं। क्या ऐसी पार्टियां बिना स्थानीय पुलिस की मिलीभगत के हो सकती हैं? यह सब कुछ पुलिस और ड्रग्स एवं नशे का धंधा करने वालों की सांठगांठ से ही होता है। इसमें सरकार की नीतियों पर भी प्रश्न खड़े होते हैं।

रेव पार्टियों की नई पनप रही संस्कृति अनेक विकृतियों का समाज बन रही है, जिसमें युवापीढ़ी को नये-नये नशे के साधन उपलब्ध कराये जाते हैं। देर रात तक चलने वाली इन पार्टियों में महफिलें जमती हैं, दिल्ली में हर वीकेंड पर फार्म हाउस एवं आलीशान बिल्डिंगों, होटलों में ये महफिलें सजती हैं। इन महफिलों में आने वाले लोगों को पूरी रात डांस, म्यूजिक, ड्रग्स और सैक्स का कॉकटेल मिलता है। इन रेव पार्टी में भारी मात्रा में विदेशी ब्रांड की शराब के साथ विक्स कोकिंग टैबलेट और हरियाणा की शराब परोसी जाती है। रात भर उन्मुक्तता, अश्लीलता एवं सैक्स से भरपूर मनोरंजन तरह-तरह के नशे के साथ परोसा जाता है। नशे एवं पागलपन की हद तक चूर हो जाने के बाद छात्र-छात्रायें अपनी चमचमाती गाड़ियों में घर लौट जाते हैं। इन महफिलों की सूचना भी खास-खास लोगों को सोशल मीडिया पर दी जाती है। समाज में नशीले पदार्थों एवं सैक्स के एजेंट सक्रिय हैं जो युवा पीढ़ी को ऐसी पार्टियों के लिये आकर्षित करते हैं। रेव पार्टियों में पकड़े जाने वाले लोगों में स्कूल जाने वाले छात्र-छात्राओं से लेकर बड़े बिजनेसमैन, राजनीतिज्ञों और अफसरों के बच्चे तक शामिल हैं। ऐसी पार्टियों में ऊंची पहुंच वाले और पैसे वाले ही जा सकते हैं। आयोजक न केवल एक ही रात में लाखों कमाते हैं बल्कि जो लड़के-लड़कियां अपने ज्यादा दोस्तों को लाते हैं, उन्हें भी मोटी कमीशन दी जाती है। यह दिल्ली के युवाओं को रंगीन बनाने का जरिया बनता जा रहा है। लेकिन ये रंगीनियां कितने अंधेरे एवं खतरों का कारण बन रही है, इस चिन्तन करना जरूरी है।

गोवा, पुणे, खंडाला, पुष्कर, मनाली से चली रेव पार्टियों ने अब दिल्ली और आसपास के शहरों में जगह बना ली है। ड्रग्स का धंधा करने वालों के लिये यह पार्टियां फायदे का धंधा बन गई हैं। जो देश के युवाओं को बर्बाद कर रहे हैं, अब तो लड़कियों ने भी सारी सीमाएं तोड़ दी है। नशीले पदार्थों, शराब, बीयर से लेकर तेज मादक पदार्थों, औषधियों तक की सहज उपलब्धता से इन रेव पार्टियों के प्रति युवा एवं किशोर वर्ग का आकर्षक बढ़ता जा रहा है। इस दीवानगी को ओढ़ने के लिए प्रचार माध्यमों ने भी भटकाया है। सरकारभी विवेक से काम नहीं ले रही है। शराबबन्दी का नाम देती है, नशे की सुरंगों से लोगों को आगाह भी करती है और शराब, तम्बाकू का उत्पादन भी बढ़ा रही है। राजस्व प्राप्ति के लिए जनता की जिन्दगी से खेलना क्या किसी लोककल्याणकारी सरकार का काम होना चाहिए? कैसी विडम्बना एवं विसंगति है कि लाइसेंस से ज्यादा की शराब बरामद हुई इसलिये आयोजकों के खिलाफ कार्रवाई हुई, लेकिन तयसीमा में पार्टी करने का सरकारी लाइसेंस होने पर ऐसी पार्टियां आयोजित हो सकती है? यह कैसी समाज-व्यवस्था है जिसमें लाइसेंस लेकर आप चाहे जो करें? इनके पीछे कौन-कौन लोग है, जो देश के युवाओं को बर्बाद कर रहे हैं, ड्रग्स एवं नशीले पदार्थों के सेवन से जवानी खत्म हो रही है। बावजूद इसके इन पर हाथ डालने की हिम्मत किसी में नहीं होती।

विश्व की गम्भीर समस्याओं में प्रमुख है नशीले पदार्थों का उत्पादन, तस्करी और सेवन की निरंतर हो रही वृद्धि। नई पीढ़ी इस जाल में बुरी तरह कैद हो चुकी है। आज हर तीसरा व्यक्ति किसी न किसी नशे का आदी हो चुका है। गुलाबी प्रांत में बढ़ती शराबबन्दी है, क्योंकि यह महात्मा गांधी का गृह प्रदेश है। क्या पूरा देश गांधी का नहीं है? वे तो राष्ट्र के पिता थे, जनता के बापू थे। नशे की संस्कृति युवा पीढ़ी को गुमराह कर रही है। अगर यही प्रवृत्ति रही तो सरकार, सेना और समाज के ऊंचे पदों के लिए शरीर और दिमाग से स्वस्थ व्यक्ति नहीं मिलेंगे। एक नशेड़ी पीढ़ी का देश कैसे अपना पूर्व गौरव प्राप्त कर सकेगा?

राजधानी दिल्ली की बस्तियों में नजर डालें तो आपको पार्कों में, सड़कों के किनारे नशा करते लोग दिखाई दे जायेंगे। पुनर्वास कालोनियों में तो 80 फीसदी बच्चे ड्रग्स के आदी हो चुके हैं। कबाड़ बीन कर रोजाना तीन सौ रुपये कमाने वाले लोग अपना पैसा ड्रग्स पर खर्च कर रहे हैं। नशा और नशे का कारोबार अपनी सीमायें पार कर रहा है। अमीर वर्ग महंगे ड्रग्स की दलदल में फंसा है तो गरीब वर्ग सस्ते नशों की गिरफ्त में है। पानी सिर के ऊपर बहने लगा है। जब तक ड्रग्स सप्लाई की चेन नहीं टूटेगी तब तक नशे का खात्मा करना मुश्किल है, भले ही कानून कितने ही सख्त क्यों न हों।

प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी मैराडोना, पॉप संगीत गायक एल्विस प्रिसले, तेज धावक बेन जॉनसन, युवकों का चहेता गायक माइकल जैक्सन, ऐसे कितने ही खिलाड़ी, गायक, सिने कलाकार नशे की आदत से या तो अपनी जीवन लीला समाप्त कर चुके हैं या बरबाद हो चुके हैं। नशे की यह जमीन कितने-कितने आसमान खा गई। विश्वस्तर की ये प्रतिभाएं कीर्तिमान तो स्थापित कर सकती हैं, पर नई पीढ़ी के लिए स्वस्थ विरासत नहीं छोड़ पा रही हैं। नशे की ओर बढ़ रही युवापीढ़ी मौद्रिक रूप से दरिद्र बन जाएगी। जीवन का माप सफलता नहीं सार्थकता होती है। सफलता तो गलत तरीकों से भी प्राप्त की जा सकती है। जिनको शरीर की ताकत खैरात में मिली हो वे जीवन की लड़ाई कैसे लड़ सकते हैं?

कितने ही परिवारों की सुख-शांति परिवार का मुखिया शराब के साथ पी जाता है। बूढ़े मां-बाप की दवा नहीं, बच्चों के लिए कपड़े-किताब नहीं, पत्नी के गले में मंगलसूत्र नहीं, चूल्हे पर दाल-रोटी नहीं, पर बोतल बेंच चाहिए। अस्पतालों के वार्ड ऐसे रोगियों से भरे रहते हैं जो अपनी जवानी नशे को भेंट कर चुके होते हैं। ये तो ये उदाहरणों के कुछ बिन्दु हैं, वरना कनेड़ों लोग अपनी अमूल्य देह में बीमार फेफड़े और जिगर लिए एक जिन्दा लाश बने जी रहे हैं परिवहीन भीड़ का अंग बन कर।

इन रेव पार्टियों में परोसे जाने वाले खतरनाक नशीले पदार्थ, शराब और तम्बाकू से भी ज्यादा हानिकारक हैं। लगता है हजारों युवा लोग स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहकर इस प्रकार के घातक नशे करने के तरीके इन रेव पार्टियों में अपना रहे हैं। हजारों-लाखों लोग अपने लाभ के लिए नशे के व्यापार में लगे हुए हैं और राष्ट्र के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। चमड़े के फीते के लिए भैंस मारने जैसा अपराध कर रहे हैं।

बढ़ती नशा प्रवृत्ति के चलते महिलाओं के प्रति अपराध बढ़ रहे हैं। हैवानी की बात तो यह है कि दिल्ली में उड़ता पंजाब की तर्ज पर नशा युवापीढ़ी के लिये नासूर बन रहा है फिर भी कहीं से कोई इसके खिलाफ आवाज नहीं उठा रहा है, कैसा विचित्र सन्नाटा पसरा है। राजधानी ने बड़े-बड़े राजनीतिक एवं सामाजिक आन्दोलन देखे हैं लेकिन इस समय जरूरत है एक नशामुक्ति आन्दोलन की, रेव पार्टियों पर अंकुश की। नशे की जड़ को समाप्त करना है और स्वस्थ समाज का वातावरण बनाना है तो समाज को जागना होगा और राजनीतिक दलों को भी। भावी पीढ़ी को बचाना है तो राजनीतिक दलों और समाज को मिलकर नशे के विरुद्ध अभियान चलाना होगा और पुलिस को भी युवाओं को मौत की ओर धकेलने वाली अपने भीतर की काली भेड़ों की पहचान करनी होगी। अगर ऐसा नहीं किया गया तो युवा वर्ग नशे की दलदल में इतना फंस जायेगा जहां से उसे निकलना मुश्किल होगा। किसी भी महानगर का कल की बांहों में झूमना जीवन की शैली हो सकता है लेकिन नशे में झूमना एक कैंसर है। नशे की आदत कांच की तरह नहीं टूटती, इसे लोहे की तरह गलाना पड़ता है। पक्षी भी एक विशेष मौसम में अपने घोंसले बदल लेते हैं। परमतुल्य अपनी वृत्तियां नहीं बदलता। वह अपनी वृत्तियां तब बदलने को मजबूर होता है जब दुर्घटना, दुर्दिन या दुर्भाग्य का सामना होता है। आखिर हम क्यों दुर्घटना, दुर्दिन या दुर्भाग्य का इंतजार कर रहे हैं?

क्या है रेव पार्टी?

इसका सही जवाब होगा- एसिड इक्सटैसी (ये ड्रग्स के नाम हैं) पीएंगे, रात भर ट्रांस म्यूजिक पर नाचेंगे, 'हट' में सेक्स करेंगे लेकिन रेव पार्टी साधारण लोगो के लिए बनाई नहीं है, हालांकि खंडाला भी रेव पार्टियों का स्वर्ग माना जाता है। रेवियों का अंदाज छिछोरों जैसा नहीं होता। यह केवल थनकुबेरों के बिगड़ैल बेटों के लिए है।

मुंबई, खंडाला, पुणे, पुष्कर से अब रेव पार्टियां मनाली तक पहुंच गई हैं, लेकिन नशे के घालमेल ने रेव पार्टी का उसूल बदल दिया है। पहले यह खुले तौर पर होती थी अब चोरी छिपे होने लगी है। ड्रग्स बेचने वालों के लिए ये रेव पार्टियां व्यवसाय की सबसे मुनाफे की जगह बन गई हैं। पुलिस की अधिक सख्ती की वजह से महानगरों की रेव पार्टियों के मतवालों को दूर जाकर अपना यह शौक पूरा करना पड़ रहा है।

पिछले कुछ समय पूर्व मुंबई में छापे के बाद पूरे देश की रेव बिरादरियों के बीच मानो रेड अलर्ट-सा जारी हो गया है। इन पार्टियों में ट्रांस म्यूजिक बजाने वाले महानगर के डीजे ने जैसे अपने होंठ सी लिए हैं। अधिकतर डीजे रेव के बारे में ऐसे बात कर रहे हैं जैसे बहुत सीधे साधे हों। लेकिन सही बात यह है कि उन्हें रेव का में होने वाले अंदर की बातों का सब पता है। महानगर के लगभग सभी डीजे इन रेव पार्टियों की वजह से करोड़पति हो रहे हैं। महरौली व गुड़गांव के एकांत फार्म हाउस में ये डीजे ही उनकी नाइट लाइफ को रंगीन बनाते हैं।

दिल्ली के बेबिए इसरहल, ईवन और फ्रांस की फिरंगी सर्किट में अधिक जाते हैं। इन पार्टियों में अक्सर जाने वाले मनु कहते हैं- रेव अब धंधा नहीं रहा। अब यह सिर्फ करीबी दोस्तों के बीच का शगल रह गया है। वे आपसे में पैसे जमा करते हैं फिर मस्ती करते हैं। पिछले कुछ समय पूर्व मुंबई में हुई गिरफ्तारी के बाद तो रेव पार्टियों में नए सदस्यों का आना एकदम बंद है। ये नए लोग ही खेल बिगाड़ते हैं। अपनी शान बघारने के लिए किसी को बता देते हैं। उसने बताया- इन पार्टियों में मॉडल, सेलिब्रिटी, एवं राजनेताओं के बच्चे जाते हैं।

मॉडल तो इन पार्टियों में अक्सर देखी जाती हैं। इन रेव पार्टीयों में लड़कों के तुलना में लड़कियों की संख्या में कमी होने का रोना रोते हों लेकिन इन रेव पार्टियों के मामले में लड़कियों ने लड़कों को काफी पीछे छोड़ दिया है। सौ रेवियों में लड़कियों की संख्या 70 होती ही है। एक समय राहुल महाजन, फरदीन खान आदि सेलिब्रिटी के भी इन पार्टियों की गिरफ्त में आने की बातें उठी थी। मुंबई के छापे में गिरफ्तार रेवियों में अभिनेता शक्ति कपूर का बेटा भी शामिल रहा है। दिल्ली के पास के इलाकों की युवकों की रेव पार्टियों में थनकुबेरों व उद्यमियों के बेटे भी जाते हैं। एयरहोस्टेस एल सीबेड की अभिनेत्री भी अक्सर देखी जाती है।

महानगरों के युवकों का रेव के प्रति उत्साह बढ़ता ही जा रहा है। अब रेव का मतलब डांस में डोपिंग यानी नशे का सेवन और सेक्स होता जा रहा है। डीजे का कहना है कि बिना ड्रग लिए वे लगातार 8 घंटे सहकेडेलिक ट्रांस म्यूजिक पर थिरक ही नहीं सकते। कुछ तो है कि जो उनमें लगातार नाचने का जुनून पैदा करते हैं। जिनके पास पैसे होते हैं वे एसिड इक्सटेसी जैसे महंगे ड्रग लेते हैं। जिनके पास उतना पैसा नहीं होता, जिन्हें अपनी जेब भी देखनी होती है वे वे शरूम (मशरूम), हशीश या गांजा से ही काम चला लेते हैं।

डीजे बताया अगर कोई लड़का लगातार डांस करता दिखे तो समझ जाइए वह इक्सटेसी पर है। रेव पार्टियों में 20 हजार, 30 हजार या 60 हजार बाट का म्यूजिक भी बजता है, जिससे शोर बहुत अधिक होता है। सिर्फ ड्रग का सवाल नहीं है। इसमें जाने की कीमत दोगुनी होती है। सेक्स को लेकर जो बातें कही जाती हैं उसमें उतनी सच्चाई न भी हो, किस इज नाइट कूल। हां, कुछ विदेशी जरूर बेहयाई पर उतर जाते हैं।

लेकिन रेव पार्टी में जाने वाले डीजे नासिर कहते हैं- नाचते हुए इश्क ने जोर मारा तो कई रेव पार्टियों में उसकी व्यवस्था भी रहती है। रेव मेन्यू पर उसके लिए हट बनने लगे हैं। स्वैपिंग इज ऑलसो कूल। इसमें भाग लेने वाले बिंदास युवकों के लिए सेक्स और प्यार की नैतिकता कोई मायने नहीं रखती।

सब कुछ दांव पर लगा सकती है लड़कियां -बिना किसी रंग, स्वाद व गंध की रेव डेट ड्रग के नाम से बहुप्रचलित इस दवा की चपेट में आकर रेव पार्टियों में जाने वाली नई लड़कियां अपना सब कुछ गंवा सकती हैं। हार्ट केयर फाउंडेशन के अध्यक्ष और नशे की लत छोड़ने के लिए युवकों को मशवरा देने वाले डॉ. केके अग्रवाल कहते हैं कि दूध, चाय या पानी के साथ मिलाकर कोई यह दवा पिला दे तो कुछ पता नहीं चलता। इस दवा का असर यह होता है कि उनके साथ कुछ भी हो, लड़कियों को यह खुशफहमी होती रहती है कि वे डेट पर हैं, बस। होश में आने पर उन्हें कुछ याद नहीं रहता कि उनके साथ क्या-क्या हुआ? मुंबई के कलब इलाके में कुछ समय पहले एक रेव पार्टी में हाई प्रोफाइल युवक-युवतियों के बीच ड्रग्स की सप्लाई का भंडाफोड़ हुआ। इसमें एक नार्कोटिक्स इंस्पेक्टर समेत करीब 350 युवक-युवतियां पकड़े गये। खबर आते ही हमें अखबारों के वो क्लासीफाइड विज्ञापन याद आ गये जिनमें खुलेआम ऐसी रेव पार्टियों के लिए युवाओं को प्रलोभन दिया जाता है। असल में यही से अय्याशी के इस फुल पैकेज को तैयार किया जाता है।

आखिर ये कौन से विज्ञापन है? विज्ञापन है- जिंदगी की मौज मस्ती और फुल सैटिसफैक्शन के लिए हमारे साथ जुड़ें और 20 हजार रुपए महीना कमाएं। संपर्क करें- एक्स फ्रेंडशिप क्लब....। फ्रेंडशिप करें, डेएण्डनाइट डेटिंग पर जाएं और महीने में 30 हजार से ज्यादा कमाएं। संपर्क करें.... । दरअसल ये विज्ञापन हैं उन फ्रेंडशिप क्लबों के जो पैसे का लालच देकर युवाओं को सीधे ड्रग्स और देह व्यापार की ओर खींच रहे हैं। इसे हम कमर्शियल सेक्स वर्कर्स या ड्रग्स सप्लायर्स भी कह सकते हैं।

पुलिस के सूत्रों की माने तो ये क्लब नहीं हैं, जो रोजाना अपने यहां रेव पार्टियों में युवक-युवतियों की भीड़ जुटाने के लिए ऐसा करते हैं। पश्चिमी देशों से जब रेव पार्टियों का कल्चर भारत आया तो इसमें सिर्फ अमीर घरानों के लोग जाते थे। तो भी सिर्फ मौज मस्ती और खाली समय का आनंद करने के लिए। समय बीतने के साथ-साथ इन पार्टियों के अंदर मौज मस्ती की परिभाषा भी बदल गई। मुंबई, चंडीगढ़ दिल्ली, बेंगलुरु, मेंगलुरु आदि बड़े शहरों में आए दिन रेव पार्टियों के पीछे चल रहे देह व्यापार और ड्रग्स के धंधे के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं, लेकिन हर बार युवक-युवतियां ही पुलिस के शिकंजे में आते हैं। न कि वो जो इस धंधे को चला रहा है।

मध्यमवर्गीय परिवारों की लड़के-लड़कियों पर चढ़ा शौक-मुंबई और लोनावाला के बीच स्थित करंजत के पब में नशे की पार्टी में पुलिस ने छापा मारा और 350 लोगों को हिरासत में लिया। सभी के ब्लड सैंपल भी लिये गये। साथ ही पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया। इससे पहले भी मुंबई में कई रेव पार्टियों में छापे के दौरान हर बार 200 से 300 युवक-युवतियों के ब्लड सैंपल लिये जा चुके हैं। वहीं चंडीगढ़ में होटल के अंदर पार्टी और पार्टी के दौरान अश्लील डांस। हाल ही में अहमदाबाद के आइटम्स में जंगल में मंगल नाम की रेव पार्टी में भारी मात्रा में ड्रग्स व कॉलगर्ल्स बरामद हुई। इन सभी पार्टियों में अर्धनग्न अवस्था में लड़कियों को नाचते हुए पुलिस ने पकड़ा। हर बार युवक-युवतियां नशे की हालत में मिले जिन्हें होश ही नहीं था।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इन पार्टियों में अब कथेडलियों की बिगड़ैल औलादें ही नहीं बल्कि साधारण परिवारों के जो लड़के-लड़कियां भी जाने लगी हैं, जिन्हें घरसे या तो खर्चा नहीं मिलता और या फिर उनके खर्च रोटेस से कहीं ज्यादा है। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हीं विज्ञापनों का सहारा ले रहे हैं, जो मौज मस्ती के बदले पैसा देने को तैयार हैं। यही नहीं अपने घरों से दूर रहकर पढ़ रहे छात्र-छात्राएं भी इन क्लबों का शिकार बन रहे हैं। आप अगर एक बार इस माया जाल में फंस गए तो निकलना काफी मुश्किल होता है।

असल में सेक्स और नशा ये दोनों ही युवाओं को तेजी से जकड़ रहे हैं। इसी के ही परिणाम है कि रेव पार्टियों के बहाने बलात्कार की वारदातें बढ़ी हैं। इसके अलावा रात्रि में लड़कियों के घर से बाहर रहने के चलन ने भी बलात्कार की घटनाओं में इजाफा किया है। घूम-फिरकर बात युवा पीढ़ी के भविष्य पर आकर टिक जाती है, क्योंकि ये ऐसे क्लब सेक्स और मनोरंजन के साथ आय का साधन भी मुहैया करा रहे हैं।

अब बात आती है इन शहरों में फ्रेंडशिप क्लबों की तो पिछले पांच साल में ऐसे क्लब यहां भी सक्रिय हो गए हैं। जो पूरी योजना के साथ। लखनऊ के कई इलाकों में ऐसे फ्रेंडशिप क्लब अभी भी चल रहे हैं। लेकिन फिलहाल ये क्लब रेव पार्टियों तक नहीं पहुंचे हैं। हां यह जरूर है कि बड़ी संख्या में युवा इन क्लबों से जुड़ रहे हैं।

इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी के श्रीजय नारायण पीजी कॉलेज लखनऊ केंद्र के काउंसलर डा. आलोक चांटिया का कहना है कि रेव पार्टियों के पीछे देहव्यापार करने वाले लोग कानून की पहुंच से इसलिए दूर हैं, क्योंकि हमारे संविधान में हर व्यक्ति को संस्था या संगठन बनाने का अधिकार है। अब यदि कोई संस्था अखबारों के माध्यम से फ्रेंडशिप के नाम पर आमंत्रण दे रही है तो वो सीधे तौर पर कमर्शियल प्रॉस्टीट्यूट को बढ़ावा देने जैसा है। देखा जाए तो ऐसे विज्ञापन छपने से पहले अखबारों को भी सोचना चाहिए, क्योंकि अखबार समाज को दिशा दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन अब समाचार पत्र भी व्यवसायिक हो चुके हैं उन्हें केवल अपना व्यवसाय चलाने में और अपना हित देखने की पड़ी है।

रेव पार्टियों के पीछे देह व्यापार की बात करें तो यहां पर 'मनी, सेक्स एण्ड प्रोटेक्शन' ये तीनों महत्वपूर्ण हैं। मनी यानी पैसा। पिछले एक दशक में युवाओं में कम उम्र में ही पैसा कमाने की ललक बढ़ी है। इसलिए ऐसे विज्ञापन 15 से 20 वर्ष की आयु के लोगों को आसानी से धन कमाने के लिए आकर्षित कर सकते हैं। सेक्स, यह विषय हमेशा से गुप्त रहा है, लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के समावेश ने इसकी परिभाषा बदल दी। अब केवल युवक ही नहीं युवतियां भी शादी से पहले सेक्स के लिए तैयार हो रही हैं। इसके पीछे मुख्य कारण है 'प्रोटेक्शन'। आज कंडोम और गर्भ निरोधक गोलियों ने लोगों को आश्वस्त कर दिया है कि वो पूरी तरह सुरक्षित हैं।

सामाजिक दृष्टिकोण से यह अलार्मिंग सिचुएशन है। अब यदि सरकार और स्वयं लोग नहीं जागे तो इसके बुरे प्रभाव संपूर्ण समाज में पड़ेंगे। सामाजिक विघटन होगा और आने वाले समय में सामाजिक संबंध खत्म होते जाएंगे। वेश्यावृत्ति, नशाखोरी और अपराध बढ़ता चला जाएगा।

लखनऊ विश्वविद्यालय के विमेंस स्टडीज के लेक्चरर डा. अमित कुमार पाण्डेय का कहना है कि इसका एक कारण बेरोजगारी तो दूसरा लड़कियों में स्टेटस मेनटेन करने की चाह। बेरोजगारी के कारण जहां युवा वर्ग सिर्फ उसी दिशा में देखता है जहां पैसा मिले। और यदि 20 से 30 हजार रुपए महीने का लालच हो तो आकर्षण और भी बढ़ जाता है। इसका फायदा ही ऐसे संगठन उठाते हैं। दूसरा कारण है लड़कियों में स्टेटस मेनटेन करने की ललक। अपने दोस्तों के बीच स्टेटस मेनटेन करने के चक्कर में भी कई बार लड़कियां धोखा खा जाती हैं और इन क्लबों के चक्कर में पड़ जाती हैं।